ध्यान दें:

14

राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा

ऐन्द्र आदि नौ व्याकरण है ऐसा प्रसिद्ध है। हनुमान तो उन सभी व्याकरणों को जानता था। **'सोऽयं नवव्याकरणार्थवेत्ता'** वाल्मीकि का वचन उसका प्रमाण है। व्याकरण छोड़कर भी शिक्षादि अनेक शास्त्रों का उनको ज्ञान है। हनुमान ज्ञान का अनन्त सागर था। स्वयं सब कुछ जानने वाले श्री राम ने इस विषय में उसकी प्रशंसा की। उसकी वाणी इस प्रकार मधुर थी की उसके मनोहर वचनों से परम आनन्द श्री राम भी आनन्दित हुए। हनुमान वानर राज सुग्रीव का दूत था। श्री राम ने कहा कि इस जैसा दूत किसी भी राजा का हो तो उस राजा की अवश्य ही सिद्धि होगी। इस पाठ में हम हनुमान के उस ज्ञान के विषय में जानकर आनन्द का अनुभव करें।

इस पाठ में 12 श्लोक हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे;

- हनुमान ज्ञान के महासागर थे, ऐसा जानने में;
- हनुमान चारों वेदों के ज्ञाता थे, ऐसा जानने में;
- बातचीत के समय में वाक्य प्रयोग किस प्रकार से करना चाहिए इस विषय में बोध प्राप्त करने में;
- राजा का दूत कैसा होना चाहिए इस ज्ञान जान पाने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए जानने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए इस विषय में जानने में;
- व्याकरण विषयक कुछ ज्ञान प्राप्त करने में;

ध्यान दें:

14.1) मूलपाठ

एवमुक्त्वा तु हनुमांस्तौ वीरौ रामलक्ष्मणौ
वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किञ्चन॥24॥
एतच्छ्रुत्वा वचन्तस्य रामो लक्ष्मणम् अब्रवीत्।
प्रहृष्टवदनः श्रीमान् भ्रातरं पार्श्वतः स्थितम्॥25॥
सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमुपागतः॥26॥
तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम्।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तम् अरिन्दम्॥27॥
नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषः शक्यम् एवं विभाषितुम्॥28॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्नम् अनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरताऽनेन न किंचिद् अपशब्दितम्॥29॥
न मुखे नेत्रयोवापि ललाटे च भ्रवोस्तथा।
अन्येश्वपि च गात्रेषु दोषः संविदितः क्वचित्॥30॥
अविस्तरमसंदिग्धम् अविलम्बितम् प्लुतम्।
उरःस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमेस्वरे॥31॥
संस्कारक्रमसंपन्नाम् अुताम् अविलम्बिताम्।
उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिणीम्॥32॥
अनया चित्रया वाचा त्रिस्थानव्यंजनस्थया।
कस्य नाराध्यते चित्तम् उद्यतासेररेरपि॥33॥
एवंविधो यस्य दूतो न भवेत् पार्थिवस्य तु।
सिद्धयन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतियोऽनघ॥34॥
एवंगुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः।
तस्य सिद्धयन्ति सर्वेऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः॥35॥

14.2) अब मूल पाठ को समझें

एवमुक्त्वा तु हनुमांस्तौ वीरौ रामलक्ष्मणौ
वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किञ्चन॥24॥

अन्वय- वाक्यज्ञः वाक्यकुशलः हनुमान् तौ एवम् उक्त्वा तु पुनः किंचन न उवाच।

अन्वयार्थः- वाक्य प्रयोग में निपुण हनुमान ने उन दोनों राम लक्ष्मण से इस प्रकार कहकर पुनः कुछ नहीं कहा।

सरलार्थः- वाक्य प्रयोग में कुशल हनुमान ने राम लक्ष्मण से इस प्रकार सब कुछ कहकर पुनः कुछ नहीं कहा। मौन हो गया।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान की वाक् कुशलता का वर्णन किया है। हनुमान ने राम लक्ष्मण के समीप आकर उन दोनों के रूप की वीरता की प्रशंसा की। और उन दोनों के

ध्यान दें:

धनुष बाणों और खड्ग की भी बहुत प्रशंसा की। और अपने एवं अपने राजा के विषय में उन दोनों से कहा। सुग्रीव के द्वारा उसके यहाँ भेजने के कारण को भी उनसे कहा। वह इतनी देर तक सब कुछ कहकर चुप हो गया। जिस रूप से वाक्य विन्यास से उसने उनके विषयों की प्रशंसा की उससे हनुमान महान वाक्यों को जानने वाला, और वाक्य प्रयोग में निपुण था ऐसा ज्ञात होता है। फिर सब कुछ कहकर वह चुप हो गया दोबारा कुछ भी नहीं कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उक्त्वा - वच् धातु + क्त्वा प्रत्यय
- वाक्यज्ञः - वाक्यं जानाति। ज्ञा धातु + क प्रत्यय।
- वाक्यकुशलः - वाक्ये कुशलः वाक्यकुशलः -सप्तमी तत्पुरुष समास।
- उवाच - वच् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- हनुमांस्तौ - हनुमान् + तौ। हल सन्धि।
- वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः - वाक्यज्ञः + वाक्यकुशलः। विसर्ग सन्धि।
- पुनर्न - पुनः + न। विसर्ग सन्धि।
- नोवाच - न + उवाच। गुण सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- वाक्यज्ञेन वाक्यकुशलेन हनुमता तौ एवम् उक्त्वा तु पुनः किंचन न ऊचे।

एतच्छ्रुत्वा वचन्तस्य रामो लक्ष्मणम् अब्रवीत्।
प्रहृष्टवदनः श्रीमान् भ्रातरं पार्श्वतः स्थितम्।।25।।

अन्वय- तस्य एतत् वचः श्रुत्वा प्रहृष्टवदनः श्रीमान् रामः पार्श्वतः स्थितं भ्रातरं लक्ष्मणम् अब्रवीत्।

अन्वयार्थः- उस हनुमान के इस प्रकार के वचनों को सुनकर प्रफुल्लित मुख से श्री राम ने पास में स्थित भाई लक्ष्मण को बोला।

सरलार्थः- हनुमान के मुख से उस सुग्रीव के विषय में सब सुनकर श्री राम आनन्दित हुए। उनका भाई लक्ष्मण पास में था। उस लक्ष्मण को उन्होंने कुछ कहना आरम्भ किया।

तात्पर्यार्थः- इतने समय तक राम ने मौन होकर हनुमान के महान भाषण को सुना। इसीलिए उन्होंने अब कहना आरम्भ किया। हनुमान के इन सभी वचनों को सुनकर राम बहुत आनन्दित हुए। राम के पास में उसका भाई लक्ष्मण था। राम अपने पास में स्थित भाई को कुछ कहने के लिए उद्यत हुए। इतनी देर तक अपने विषय में प्रशंसा आदि को सुनने से साधारण व्यक्तियों का मन चंचल होता है। परन्तु राम अपनी प्रशंसा को सुनकर भी बिना विचलित हुए मौन ही रहे। इससे राम का धीरत्व सिद्ध होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अब्रवीत् - धातु + लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- प्रहृष्टवदनः - प्रहृष्टं वदनं यस्य सः - बहुव्रीहि समास।
- स्थितम् - स्था धातु + क्त प्रत्यय द्वितीय एकवचन।

ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- एतच्छ्रुत्वा - एतत् + श्रुत्वा। श्चुत्व सन्धि।
- वचस्तस्य - वचः + तस्य। विसर्ग सन्धि।
- रामो लक्ष्मणम् - रामः + लक्ष्मणम्। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- तस्य एतत् वचः श्रुत्वा प्रहृष्टवदनेन श्रीमता रामेण पार्श्वतः स्थितः लक्ष्मणः अब्रूयत्।

सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमुपागतः॥26॥

अन्वय- अयं कपीन्द्रस्य महात्मनः सुग्रीवस्य सचिवः तम् एव काङ्क्षमाणस्य मम अन्तिकम् इह आगतः।

अन्वयार्थः- यह वानरों के राजा महाबुद्धिमानी सुग्रीव का सचिव उस सुग्रीव की इच्छा से मुझ राम के पास यहाँ आया।

सरलार्थः- हनुमान के वचनों को सुनकर आनन्दित राम ने भाई को कहा कि मैं सुग्रीव के लिए यहाँ आया और वानरों के राजा सुग्रीव का सचिव यह हनुमान मेरे पास आया।

तात्पर्यार्थः- श्री राम हनुमान के वचनों को सुनकर आनन्दित हुए। राम लक्ष्मण वानरराज सुग्रीव के साथ ही साक्षात्कार करने के लिए इस देश को आए। और यहाँ उस सुग्रीव का सचिव हनुमान स्वयं उन दोनों के पास आ गया। इसीलिए श्री राम ने आनन्दित होकर पास में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि मैं सुग्रीव की इच्छा करता हुआ यहाँ आया और यह हनुमान उस वानरराज सुग्रीव का ही सचिव मेरे पास आ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कपीन्द्रस्य - कपीनाम् इन्द्रः कपीन्द्रः - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- काङ्क्षमाणस्य - काङ्क्ष धातु + शानच् प्रत्यय, षष्ठी एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- सचिवोऽयम् - सचिवः + अयम्। विसर्ग सन्धि।
- ममान्तिकम् - मम् + अन्तिकम्। सवर्ण दीर्घ सन्धि।
- इहागतः - इह + आगतः - सवर्ण दीर्घ सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- अनेन कपीन्द्रस्य महात्मनः सुग्रीवस्य सचिवेन तम् एव काङ्क्षमाणस्य मम अन्तिकम् आगतम्।

तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम्।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तम् अरिन्दम्॥27॥

अन्वय- सौमित्रे! तं सुग्रीवसचिवं कपिं वाक्यज्ञम् अरिन्दमं स्नेहयुक्तम् मधुरैः वाक्यैः अभ्यभाष।

अन्वयार्थः- हे लक्ष्मण! तुम शत्रुदमन सुग्रीव सचिव कपिवर हनुमान से, जो बात के मर्म को

समझने वाले हैं तुम स्नेह पूर्वक मीठी वाणी में बातचीत करो।

सरलार्थः- राम ने पास में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि - हे लक्ष्मण! सुग्रीव सचिव हनुमान जैसे स्नेह से युक्त है वैसे ही मधुर वचनों से बात की।

तात्पर्यार्थः- राम ने पास में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि - सुग्रीव का सचिव यह हनुमान महान ज्ञानी है। वाक्य प्रयोग के विषय में इसकी महती निपुणता है। यह हनुमान शत्रुओं का नाशक है। हे सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण! हनुमान के साथ तुम मधुर वचनों से ही बात करो, जिससे वह स्नेह युक्त हो। वस्तुतः यदि मन्त्री स्नेह युक्त होता है तो उसका राजा भी स्नेही होता है। अगर राजा स्नेही होता है तो कार्य शीघ्र सम्पन्न होता है। इसीलिए हनुमान स्नेही हो तो जिस कार्य के लिए राम लक्ष्मण यहाँ आए वह कार्य सिद्ध होगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अभ्यभाष - अभि +भाष् धातु लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन।
- सुग्रीवसचिवम् - सुग्रीवस्य सचिवः सुग्रीवसचिवः- षष्ठी तत्पुरुष समास।
- स्नेहयुक्तम् - स्नेहेन युक्तः स्नेहयुक्तः। तृतीय तत्पुरुष समास।

सन्धि युक्त शब्द

- मधुरैर्वाक्यैः - मधुरैः + वाक्यैः, विसर्ग सन्धिः।

प्रयोग परिवर्तन- सौमित्रे! स सुग्रीवसचिवः कपिः वाक्यज्ञः अरिन्दमः स्नेहयुक्तः मधुरैः वाक्यैः अभिभाष्यताम्।

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।
नासामवेदविदुषर शक्यम् एवं विभाषितुम्॥28॥

अन्वय- अनृग्वेदविनीतस्य अयजुर्वेदधारिणः असामवेदविदुषः एवं विभाषितुं न शक्यम्।

अन्वयार्थः- अनृग्वेदविनीतस्य से अभिप्राय है- ऋग्वेद के अभ्यास से रहित यजुर्वेद को न जानने वाला ऊह रहस्य आदि गान विशेष को न जानने वाला इस प्रकार की बातचीत नहीं कर सकता।

सरलार्थः- राम ने हनुमान के पाण्डित्य से मुग्ध होकर लक्ष्मण को कहा कि जो सम्पूर्ण ऋग्वेद को नहीं जानता है, जिसने सम्पूर्ण यजुर्वेद का अध्ययन नहीं किया है। जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार के पाण्डित्य पूर्ण वाक्यों को नहीं बोल सकता है। अर्थात् हनुमान सभी वेदों के ज्ञाता है।

तात्पर्यार्थः- यह श्लोक रामायण के प्रसिद्ध श्लोकों में से एक है। इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के महाज्ञानित्व और सर्ववेदज्ञत्व को वर्णित किया है। राम हनुमान के ज्ञान को और वाक्य प्रयोग में दक्षता को देखकर चकित हुए। इसीलिए उन्होनें भाई लक्ष्मण को कहा की जो गुरु के पास में श्रद्धा पूर्वक स्वरादि को मन्त्रों में प्रयोग करके और समझकर ऋग्वेद को नहीं पढ़ता है, वह इस प्रकार के ज्ञानपूर्ण वचनों को नहीं कह सकता है और जिसने यजुर्वेद को सम्यक् रूप से नहीं पढ़ा अर्थात् यजुर्वेद के प्रत्येक अनुवाक में अन्य अनुवाक का सांकर्य है। इसीलिए जो वह धारण नहीं कर सकता वह इस प्रकार के वचनों को नहीं कह सकता है। और जिसने नियम पूर्वक सामवेद का अध्ययन नहीं किया, अर्थात् सामवेद में बहुत से रहस्य आदि से गर्भित गान हैं, जो उनको गाना नहीं जानता है, वह इस प्रकार के वचनों को नहीं कह सकता है।

पाठ-14

राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा

ध्यान दें:

ध्यान दें:

हनुमान ने ऋग्वेद को श्रद्धापूर्वक पढ़ा, यजुर्वेद का भी सम्यक् अध्ययन किया, और सामवेद को भी नियमपूर्वक पढ़ा है ऐसा श्री राम कहना चाहते हैं। सामान्यत: संसार में इस प्रकार के विद्वान दुर्लभ हैं। राम जैसे महान ज्ञानी हनुमान की प्रशंसा करते हैं। इसीलिए हनुमान साधारण प्रतीत नहीं होते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनृग्वेदविनीतस्य- ऋग्वेदस्य विनीत: ऋग्वेदविनीत:- षष्ठी तत्पुरुष समास। न ऋग्वेदविनीत: न् तत्पुरुष समास।
- अयजुर्वेदधारिण: - यजुर्वेदं धारयति इति यजुर्वेदधारी। न यजुर्वेदधारी- न् तत्पुरुष समास
- असामवेदविदुष: - सामवेदस्य विद्वान सामवेदविद्वान - षष्ठी तत्पुरुष समास।, न सामवेद विद्वान् असामवेदविद्वान् - न् तत्पुरुष समास।
- विभाषितुम् - वि+ भाष् धातु+ तुमुन् प्रत्यय।

सन्धि युक्त शब्द

- नानृग्वेदविनीतस्य - न + अनृग्वेदविनीतस्य। सवर्णदीर्घ सन्धि।
- नायजुर्वेदधारिण: - न + अयजुर्वेदधारिण:। सवर्णदीर्घ सन्धि।
- नासामवेदविदुष: - न + असामवेदविदुष:। सवर्णदीर्घ सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- अनृग्वेदविनीत: अयजुर्वेदधारी असामवेदविद्वान् एवं विभाषितुं न शक्नुयात्।

नूनं व्याकरणं कृत्स्नम् अनेन बहुधा श्रुतम्।
व्यवहारताऽनेन न किंचिद् अपशब्दितम्॥29॥

अन्वय- नूनम अनेन कृत्सनं व्याकरणं बहुधा श्रुतम्। अत एव बहु व्याहरता अनेन किंचित न अपशब्दितम्।

अन्वयार्थ:- हनुमान ने सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र को अनेकों बार पढ़ा। इसीलिए अनेक प्रकार से कहकर भी कुछ अपशब्द नहीं कहा।

सरलार्थ:- हनुमान की विद्वता से मुग्ध राम ने लक्ष्मण को कहा की - हनुमान ने सम्पूर्ण व्याकरण को अनेकों बार पढ़ा। इसीलिए उसने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा, किन्तु एक भी अपशब्द का प्रयोग नहीं किया।

तात्पर्यार्थ:- इससे पूर्व के श्लोक में राम ने हनुमान की वेद विद्वता के विषय में कहा। इसीलिए अब उसके व्याकरण ज्ञान के विषय में कहते हैं। राम ने समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि यह हनुमान न केवल वेद को ही जानता है, इसने तो सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र को बहुत बार पढ़ा है। इसीलिए कौन से शब्द साधु है, कौन से शब्द असाधु है इसका उसको ज्ञान है। और किस शब्द का क्या अर्थ है इसका भी उसको ज्ञान है। इसीलिए उसने इतने समय तक बहुत कुछ कहा, किन्तु एक भी अपशब्द का प्रयोग नहीं किया। सभी शब्दों में कौन प्रत्यय है और कौन प्रकृति यह हनुमान सम्यक् रूप से जानता है। इसीलिए उसने सभी साधु शब्दों को अपने-अपने अर्थ में प्रयुक्त किया। वस्तुत: इस श्लोक से हनुमान वेद-व्याकरण इत्यादि सभी विषयों को जानते हैं ऐसा महर्षि वाल्मीकि ने वर्णित किया है।

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- श्रुतम् - श्रु धातु + क्त प्रत्यय।
- व्याहरता - वि +आ + हृ धातु + शतृ प्रत्यय तृतीय एकवचन।
- अपशब्दितम् - अप + शब्द धातु + क्त प्रत्यय, नपुंसकलिङ्।

सन्धि युक्त शब्द

- व्याहरताऽनेन - व्याहरता अनेन। सवर्णदीर्घ सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- नूनम अयं कृत्सनं व्याकरणं बहुधा श्रुतवान्। अत एव बहु व्याहरन् अयं किञ्चित् न अपशब्दितवान्।

न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रवोस्तथा।
अन्येश्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित्॥30॥

अन्वय- अस्य मुखे नेत्रयोः ललाटे भ्रवोः च तथा अन्येषु सर्वेषु अंगेषु न क्वचित् दोषः संविदितः।

अन्वय अर्थ- इस हनुमान के मुख में शरीर में नेत्रों में, मस्तक और भौंह पर तथा सभी अंगों में कोई भी विकार नहीं दिखा।

सरलार्थः- श्री राम ने भाई लक्ष्मण को कहा कि हनुमान ने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा। किन्तु उसके किसी भी अंग में कोई भी दोष नहीं दिखा। इसका अर्थ है कि हनुमान ने शिक्षाशास्त्र को अच्छी प्रकार से जाना है।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के शिक्षा शास्त्र के ज्ञान को वर्णित किया है। साधारण व्यक्ति जब बातचीत करते हैं तब उनके मुख, ललाट इत्यादि अंगों में अलग-अलग विकार दिखाई देता है। अगर बातचीत के समय अंगों में विकार होता है तो शिक्षा शास्त्र में वह बोलने का दोष कहलाता है। किन्तु राम ने कहा हनुमान का यह दोष नहीं था। हनुमान ने राम लक्ष्मण के समीप आकर बहुत कुछ कहा। किन्तु उसके मुख पर, दोनों आंखों में, मस्तक पर, और भौंह किसी भी अंगों में कोई भी विकार नहीं हुआ। उससे ज्ञात होता है कि हनुमान ने शिक्षाशास्त्र को भी सम्यक् रूप से पढ़ा। इसीलिए वह दोषों को सम्यक् रूप से जानता है। और यहाँ राम भी सूक्ष्मदर्शी हैं ऐसा ज्ञात होता है। इसीलिए ही बातचीत के समय में हनुमान के अंगों में विकार नहीं हुआ, इस सूक्ष्म विषय को भी उन्होंने देख लिया।

सन्धि युक्त शब्द

- नेत्रयोश्चापि - नेत्रयोः + च + अपि। विसर्ग सन्धि, सवर्णदीर्घ सन्धि।
- भ्रुवोस्तथा - भ्रुवोः + तथा। विसर्ग सन्धि।
- अन्येष्वपि - अन्येषु + अपि। यण् सन्धि

प्रयोग परिवर्तन- अस्य मुखे नेत्रयोः ललाटे भ्रवोः च तथा अन्येषु सर्वेषु अंगेषु न क्वचित् दोषं संविदितवान् अहम्।

अविस्तरमसंदिग्धम् अविलम्बितम् श्रुतम्।
उरःस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमेस्वरे॥31॥

अन्वय- अस्य अविस्तरम् असंदिग्धम् अविलम्बितम् अव्यथम् उरःस्थं कण्ठगं मध्यमस्वरं वाक्यं वर्तते।

ध्यान दें:

अन्वयार्थः- हनुमान विस्तार रहित, सन्देह से रहित, अविलम्बित, पीड़ा न देने वाले हृदय से मध्यम स्वर से युक्त वाक्य को कहता है।

सरलार्थः- श्री राम ने हनुमान द्वारा प्रयुक्त वाक्य की प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण को कहा की हनुमान ने जो जो वाक्य प्रयोग किया, वह वाक्य बहुत विस्तृत नहीं है।, सन्देह रहित है, बहुत तेज उच्चारित भी नहीं है, और सुनने में कष्ट दायक भी नहीं है, मध्यम स्वर से प्रयुक्त है।

तात्पर्यार्थः- प्रस्तुत श्लोक में राम ने हनुमान की वाक्य रचना के सौन्दर्य को वर्णित किया है। साधारण व्यक्ति जो वाक्य को प्रयोग करते हैं वह बहुत विस्तृत होता है। और क्या अक्षर को प्रयोग करे इसे जानने में कहीं सन्देह होता है। कुछ व्यक्ति तो वाक्य को अत्यंत तेज उच्चारित करते हैं, इसीलिए वह सुनने से कानों में पीड़ा उत्पन्न होती है, अर्थात् सुनने में अत्यन्त कटु होता है। शिक्षाशास्त्र के अनुसार ये भी बोलने में दोष है। इस प्रकार का एक भी दोष हनुमान को नहीं था। हनुमान ने जिस-जिस वाक्य को प्रयुक्त किया वह अत्यन्त संक्षिप्त, और इस प्रकार से उसने वर्णो को प्रयोग किया जिससे वर्णबोध में राम को कोई भी संदेह उत्पन्न नहीं हुआ। और उसने वाक्यों को भी बहुत तेज उच्चारित नहीं किया। उससे वे वाक्य सुनने में मधुर थे। और उसने सदैव ही मध्यम स्वर से वाक्यों का प्रयोग किया। वाक्य प्रयोग के विषय में शिक्षाशास्त्र में कहे गए दोष हनुमान में नहीं थे ऐसा महर्षि वाल्मीकि ने इस श्लोक में वर्णित किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अविस्तरम् - अविद्यमानः विस्तरः यस्मिन् तत्। बहुव्रीहि समास।
- असन्दिग्धम् - न सन्दिग्धम् असन्दिग्धम्। न् तत्पुरुष समास।
- अविलम्बितम् - न विलम्बितम् । न् तत्पुरुष समास।
- अव्यर्थम् - न विद्यते व्यथा यस्मात् तत् - बहुव्रीहि समास।
- मध्यतस्वरम् - मध्यमः स्वरः यस्य तत् - बहुव्रीहि समास।

प्रयोग परिवर्तन- अस्य अविस्तरेण असंदिग्धेन अविलम्बितेन अव्यथेन उरःस्थेन कण्ठगेन मध्यमस्वरेण वाक्येन वत्यते।

संस्कारक्रमसंपन्नाम् अुताम् अविलम्बिताम्।
उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिणीम्॥32॥

अन्वय- अयं संस्कारक्रमसंपन्नाम् अुताम् अविलम्बितां हृदयहर्षिणीं कल्याणीं वाचम् उच्चारयति।

अन्वयार्थः- यह हनुमान संस्कारक्रम से सम्पन्न, अति शीघ्र उच्चारण से रहित, विलम्ब के बिना उच्चारित हृदय को हर लेने वाली मधुर कल्याणकारी वाणी को कहता है।

सरलार्थः- राम ने हनुमान की वाणी की प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण को कहा कि हनुमान वाणी के क्रम में शिक्षा व्याकरण आदि संस्कारों को जानता है, और जिन वर्णों का प्रयोग करता है, उनके ध्वंस को करता है। शीघ्रता से उच्चारण नहीं करता, विलम्ब से उच्चारित नहीं करता है। और उसकी वाणी को सुनने से हृदय में आह्लाद् होता है।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में राम समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को हनुमान के द्वारा प्रयुक्त वाणी की महत्ता को कहते हैं। अगर वर्णों को शीघ्र उच्चारित करते हैं तो, जिन वर्णों को उचित प्रकार से कहा, वे भी विध्वंस होते हैं, अर्थात् उचित प्रकार से सुनाई नहीं देते हैं। और अगर दो शब्दों के बीच में अत्यन्त

ध्यान दें:

विलम्ब हो तो वाक्य का अर्थ समझ नहीं आता। हनुमान की वाणी तो क्रम से शिक्षा-व्याकरण-इत्यादि संस्कारों को उत्पन्न करती है, अर्थात् हनुमान की वाणी शिक्षा-व्याकरण इत्यादि शास्त्र की दृष्टि से उचित है। और अतिशीघ्र उच्चारण से रहित है, इसीलिए उचित रूप से प्रयुक्त वर्णों का विध्वंस न करती है। और उसके दो शब्दों के मध्य उच्चारण में अत्यन्त विलम्ब नहीं है, इसीलिए शब्दों के बीच में सम्बन्ध था। इन को छोड़कर भी बहुत से गुण उसकी वाणी में थे। इस प्रकार के गुणों से युक्त उसकी वाणी को सुनकर राम बहुत आनंदित हुए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- संस्कारक्रमसंपन्नाम् - संस्काराणां क्रमः संस्कारक्रमः - षष्ठी तत्पुरुष समास। संस्कारक्रमे संपन्ना संस्कारक्रमसम्पन्ना - सप्तमी तत्पुरुष समास।
- अविलम्बिताम् - न विलम्बिता - न् तत्पुरुष समास।
- हृदयहर्षिणीम् - हृदयं हर्षयति इति।

प्रयोग परिवर्तन- अनेन हनुमता संस्कारक्रमसंपन्ना अुता अविलम्बिता हृदयहर्षिणी कल्याणी वाक् उच्चार्यते।

अनया चित्रया वाचा त्रिस्थानव्यंजनस्थया।
कस्य नाराध्यते चित्तम् उद्यतासेररेरपि॥33॥

अन्वय- अनया चित्रया त्रिस्थानव्यंजनस्थया वाचा उद्यतासेः अपि कस्य अरेः चित्तं न आराध्यते।

अन्वयार्थः- तीनों स्थानों में उर-कण्ठ-मूर्धा से उच्चारित वाणी उद्यत तलवार को भी किस शत्रु के मन के अनुकूल नहीं होती।

सरलार्थः- राम ने हनुमान की वाणी की प्रशंसा की- उसकी वाणी वक्ष, कण्ठ और मूर्धा तीनों स्थानों से उच्चारित है, इसलिए उसकी वाणी विस्मयकारी है, यदि तलवार को धारण कर मारने के लिए प्रवृत्त शत्रु के प्रति इस प्रकार की वाणी का प्रयोग करें तो वह शत्रु भी सन्तुष्ट होता है।

तात्पर्य अर्थ- इस श्लोक में राम समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को हनुमान के द्वारा प्रयुक्त वाणी की सामर्थ्य को कहते हैं। वर्ण तीन प्रकार के होते हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। उदात्त वर्ण का उच्चारण सिर से होता है। अनुदात्त वर्ण का उच्चारण वक्ष से होता है। और स्वरित वर्ण का उच्चारण कण्ठ से होता है। यदि उदात्त अनुदात्त स्वरित इन स्वरों के साथ वर्णों का प्रयोग करते है तो वह वर्ण साधु होता है। हनुमान की वाणी सिर-वक्ष-कण्ठ इत्यादि स्थानों से उच्चारित थी। हनुमान ने उदात्त-अनुदात्त-स्वरित इन स्वरों के साथ ही वर्णों को प्रयोग किया ऐसा ज्ञात है। तलवार को धारण कर मारने के लिए उद्यत शत्रु के प्रति कोई व्यक्ति यदि इस प्रकार के मनोहर वचनों का प्रयोग करता है, तब वह शत्रु भी उन वचनों से अत्यन्त सन्तुष्ट होता है। पुनः उसकी हानि नहीं करता। इस प्रकार का सामर्थ्य हनुमान की वाणी में था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- त्रिस्थानव्यंजनस्थया - त्रीणि च तानि स्थानानि - इतरेतरद्वन्द्व समास।
- त्रिस्थानेषु व्यंजनं त्रिस्थानव्यंजनम् - सप्तमी तत्पुरुष समास।
- आराध्यते - आ + राध धातु।
- उद्यतासेः - उद्यतः असिः येन स उद्यतासिः इति - बहुव्रीहि समास

ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- नाराध्यते - न + आराध्यते। सवर्ण दीर्घ सन्धि।
- उद्यतासेररे: - उद्यतासे: + अरे: विसर्ग सन्धि।
- अरेरपि - अरे: + अपि। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- इयं चित्रा त्रिस्थानव्यंजनस्था वाक् उद्यतासे: अपि कस्य अरे: चित्तं न आराध्नोति।

एवंविधो यस्य दूतो न भवेत् पार्थिवस्य तु।
सिद्धयन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतियोऽनघ॥34॥

अन्वय- हे अनघ! यस्य पार्थिवस्य एवंविध: दूत: न भवेत् तस्य कार्याणां गतय: कथं सिध्यन्ति।

अन्वयार्थ:- हे निष्पाप लक्ष्मण! जिस पार्थिव राजा का इस प्रकार का एवं इस प्रकार के गुणों से युक्त दूत नहीं होगा उस राजा के कार्यो का फल कैसे सिद्ध होता हैं।

सरलार्थ:- राम ने समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि जिस राजा का हनुमान के जैसा महाविद्वान वाक्यों में कुशल सभी वेदों का ज्ञाता दूत होता है, वह राजा यदि दूत के अनुसार कार्य को करता है तो उसके सभी कार्यों की अवश्य सिद्धि होती है।

तात्पर्यार्थ:- इस श्लोक में राम हनुमान के दूतत्व की प्रशंसा करते है। यदि दूत ज्ञानी, चतुर, बातचीत में कुशल होता है तो राजा के कार्य अत्यन्त सुगमता से होते है। उसके कार्य शीघ्र ही सिद्ध होते हैं। अज्ञानी दूत तो शत्रुओं के पास में राजा के गुप्त तत्व को कह देता है। इसीलिए यदि दूत अज्ञानी हो तो राजा की हानि ही होती है। वानर राज सुग्रीव का दूत हनुमान था। वह महाज्ञानी, वाक् निपुण, सभी वेदों को जानने वाला और व्याकरण शिक्षा इत्यादि शास्त्रों को जानने वाला था। इसीलिए राम ने भाई लक्ष्मण को कहा कि- इस प्रकार के गुणों से सम्पन्न हनुमान के जैसा दूत जिस राजा का है, उस राजा के सभी कार्य अवश्य ही सिद्ध होते हैं, एक भी कार्य निष्फल नहीं होता है। इस श्लोक में राम ने भाई लक्ष्मण को 'अनघ' से सम्बोधित किया। अनघ का अर्थ है- जिसका कोई पाप नहीं है वह। इसीलिए लक्ष्मण पूरी तरह से पाप रहित था लक्ष्मण की महत्ता भी यहाँ सिद्ध होती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनघ - अविद्यमानम् अघं यस्मिन् स:। बहुव्रीहि समास।

सन्धि युक्त शब्द

- एवंविधो यस्य - एवंविध: + यस्य। विसर्ग सन्धि।
- दूतो न - दूत: + न विसर्ग सन्धि।
- गतयोऽनघ - गतय: + अनघ। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- हे अनघ! यस्य पार्थिवस्य एवंविधेन दूतेन न भूयतां तस्य कार्याणां गतिभि: कथं सिध्यते।

एवंगुणगणैर्युक्ता यस्य स्यु: कार्यसाधका:।
तस्य सिद्धयन्ति सर्वेऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिता:॥35॥

ध्यान दें:

अन्वय- यस्य कार्यसाधकाः एवंगुणगुणैः युक्ताः स्युः, तस्य सर्वे अर्थाः दूतवाक्यप्रचोदिताः सन्तः सिध्यन्ति।

अन्वयार्थः- जिस राजा के कर्मचारी विद्वान, चतुर, वाक् निपुण आदि गुणों से युक्त होते हैं, उस राजा के सभी कार्य दूत वाक्यों के अनुसार करें तो सिद्ध होते हैं।

सरलार्थः- राम ने हनुमान के विषय में लक्ष्मण को कहा की- किसी राजा का यदि हनुमान के सदृश विद्वान, वाक् निपुण कार्यकर्ता होता है तब यदि उस कार्यकर्ता के वाक्यों के अनुसार कार्य को किया जाए तो वह कार्य अवश्य ही पूर्ण होता है।

तात्पर्य अर्थ- सभी वेदों का ज्ञाता, वाणी माधुर्य, बातचीत में निपुण, व्याकरण शिक्षा इत्यादि शास्त्रों का ज्ञाता इत्यादि अनेक गुण हनुमान में थे। और हनुमान वानरराज सुग्रीव का सचिव था। इसीलिए राम ने भाई लक्ष्मण को कहा कि जिस राजा का इस प्रकार के गुणों से युक्त हनुमान के जैसा कर्मचारी होता है, वह राजा यदि उस कार्य सहायक अर्थात् सचिव के निर्देशानुसार कार्य को सम्पादित करता है, तब उसके कार्य अवश्य ही सिद्ध होते हैं। इसीलिए राजा को उसके जैसे गुणों से सम्पन्न सचिव की ही नियुक्ति करनी चाहिए यह भी ज्ञात होता है। यदि राज कार्य के लिए अज्ञानी सचिव की नियुक्ति करे तो राजा के सभी कार्य निष्फल होते है। और इससे राजा सुग्रीव को भी शीघ्र ही अभीष्ट लाभ होगा राम ने सूचना दी। वस्तुतः राम ने हनुमान की प्रशंसा की, उससे हनुमान को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

व्याकरणात्मक टिप्पणही

- युक्ताः - युज् धातु + क्त प्रत्यय, प्रथमा बहुवचन।
- स्युः - अस् धातु, लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन।
- कार्यसाधकाः - कार्यं साधयन्ति इति।
- दूतवाक्यप्रचोदिताः - दूतवाक्येन प्रचोदिताः - तृतीय तत्पुरुष समास।

सन्धि युक्त शब्द

- गुणगणैर्युक्ताः - गुणगणैः + युक्ताः विसर्ग सन्धि।
- युक्ता यस्य - युक्ताः + यस्य। विसर्ग सन्धि।
- सर्वेऽर्थाः - सर्वे + अर्थाः। पूर्वरूप सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- यस्य कार्यसाधकैः एवंगुणगुणैः युक्तैः भवेयम्, तस्य सर्वैः अर्थैः दूतवाक्यप्रचोदितैः सद्भिः सिध्यते।

पाठगत प्रश्न

1. हनुमान किसका सचिव था?
2. कौन इस प्रकार के वचनों को कहने में सक्षम नहीं होता?
3. किस शास्त्र को हनुमान ने अनेक बार सुना?
4. हनुमान के किन अंगों में विकार नहीं है?

ध्यान दें:

5. हनुमान ने किस प्रकार के वाक्य को कहा?

6. हनुमान की वाणी कैसी थी?

7. हनुमान की तीन स्थानों से उच्चारित विचित्र वाणी किसके चित्त को प्रसन्न करती है?

8. अगर हनुमान जैसा दूत हो तो राजा का क्या सिद्ध होता है?

9. राजा के कार्य कैसे सिद्ध होते हैं?

10. 'वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किंचन' यहाँ वाक्यज्ञ इससे क्या निर्दिष्ट है।

क. लक्ष्मण ख. हनुमान

ग. राम घ. बाली

11. राम लक्ष्मण किसको ढूंढने के लिए पम्पा नदी के तीर पर आए।

क. सुग्रीव को ख. बाली को

ग. हनुमान को घ. सीता को

12. सौमित्रे इससे किसका सम्बोधित किया है

क. राम ख. हनुमान

ग. सुग्रीव घ. लक्ष्मण

13. तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम् - यह किसकी उक्ति है।

क. लक्ष्मण की ख. हनुमान की

ग. राम की घ. सुग्रीव की

14. अविस्तरम् असन्दिग्धम् अविलम्बितम् अव्यथम्' वाक्य किसका है

क. सुग्रीव का ख. राम का

ग. हनुमान का घ. लक्ष्मण का

15. क-स्तम्भ से ख-स्तम्भ मिलाओ-

क-स्तम्भ	**ख-स्तम्भ**
1. प्रहृष्टवदन	क. समीपम्
2. सौमित्रिः	ख. विद्यते
3. अन्तिकम्	ग. श्री राम
4. महावैयाकरण	घ. वदति
5. मध्यमस्वरम्	ङ लक्ष्मणः
6. वर्तते	च. हनुमता सदृशः
7. हृदयहर्षिणी	छ. हनुमान
8. उच्चारयति	ज. सन्तोष्यते

9.	दूतः	झ.	वाक्यम्
10.	आराध्यते	ञ.	वाक्

पाठ सार

सुग्रीव के आदेशानुसार हनुमान अपने वानर रूप को छिपाकर भिक्षु के वेश में पम्पा सरोवर के तट पर स्थित राम लक्ष्मण के समीप उपस्थित हुए। और वहाँ जाकर उसने उन दोनों के पूजनादि विधान को करके उनकी वीरता और सौन्दर्य की प्रशंसा की। फिर उसने सुग्रीव के विषय में उन दोनों को कहकर सुग्रीव के सचिव के रूप में अपना परिचय दिया। फिर वह पुनः कुछ न कहकर मौन हो गया। उसके यह सारे वचनों को सुनकर श्री राम को महान आनन्द हुआ। उसके पास में ही भाई लक्ष्मण था। फिर उन्होनें लक्ष्मण को लक्ष्य करके हनुमान की प्रशंसा को करना आरम्भ किया। इतने समय तक हनुमान ने जिस प्रकार की भाषा को प्रयुक्त किया। उस प्रकार के महान कथन तो कोई महाज्ञानी, सर्व वेदों का ज्ञाता, विद्वान ही कर सकता है। हनुमान ऋग्वेद-सामवेद-यजुर्वेद तीनों वेदो का ज्ञाता था। इतने समय तक बहुत कुछ कहकर भी उसके मुख से कोई अपशब्द प्रयुक्त नहीं हुआ। किसी ने यदि व्याकरण शास्त्र का बहुत बार अध्ययन किया होगा, वह ही इस प्रकार की भाषा को कह सकता है इस प्रकार श्री राम ने हनुमान के वैयाकरणत्व की प्रशंसा की।

हनुमान ने न केवल व्याकरण शास्त्र को बल्कि शिक्षादि शास्त्रों को भी भली भाँति पढ़ा। इसीलिए यहाँ बोलने पर अंगों में इस प्रकार के विकार जो दोष है, उनको हनुमान अच्छी प्रकार से जानता था। इसीलिए श्री राम को इतना बोलने पर भी किसी भी अंग में कोई विकार दृष्टिगत नहीं हुआ। हनुमान की वाणी सम्पूर्णतया शिक्षाशास्त्रादि में निर्दिष्ट ही थी। वह सदैव मध्यम स्वर से ही वार्ता करता था। श्री राम का उसके वचनों को सुनने से व्याकरणादि संस्कार उत्पन्न होता था। इसीलिए वह सुनने से परमानन्द श्री राम भी आनन्दित हुए। यदि इस प्रकार की वाणी का प्रयोग किया जाए तो तलवार लेकर मारने के लिए प्रवृत्त शत्रु भी वशीभूत हो जाता है। ऐसा कहकर श्री राम ने उसके वचनों की महत्ता को प्रकाशित किया। अगर किसी भी राजा का इस प्रकार के गुणों से युक्त दूत होता है तो वह राजा शीघ्र ही सिद्धि को प्राप्त करेगा इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। और वह राजा यदि दूत वचनों के अनुसार सभी कार्यों को करता है तब अवश्य ही उसके सभी अर्थ सिद्ध होते हैं। ऐसा कहकर श्री राम ने उसके दूतत्व की भी प्रशंसा की। यह इस पाठ का सार है।

आपने क्या सीखा

- मनुष्यों को वाणी रूपी आभूषण ही सभी आभूषणों की अपेक्षा उचित रूप से अलंकृत करता है।
- वाणी के माधुर्य से भगवान भी असीम सन्तोष को प्राप्त करते है।
- व्याकरण शिक्षाशास्त्र के ज्ञाता द्वारा वाक्य प्रयोग के समय कोई भी वाक् सम्बन्धी दोष नहीं होता।
- वाणी की शक्ति से तो तलवार को धारण कर मारने के लिए प्रवृत्त शत्रु भी वशीभूत होता है।
- राजा को सदैव शास्त्रज्ञ वाणी में मधुर इत्यादि गुणों से युक्त दूत को नियुक्त करना चाहिए।
- गुणी कार्य सहायक के निर्देशानुसार कार्य करने से राजा के सभी अर्थों की सिद्धि होती है।

ध्यान दें:

ध्यान दें:

पाठान्त प्रश्न

1. राम ने पास में स्थित भाई को क्या कहा सप्रसंग लिखिए।
2. हनुमान के व्याकरण ज्ञान के विषय में राम की उक्ति को ग्रन्थानुसार आलोचित कीजिए?
3. नानृग्वेदविनीतस्य.....श्लोक की संक्षेप से व्याख्या कीजिए।
4. हनुमान की वाणी के सौन्दर्य को वर्णित कीजिए।
5. हनुमान के शिक्षाशास्त्र ज्ञान के विषय में राम की उक्ति को ग्रन्थानुसार आलोचित कीजिए।
6. हनुमान के दूतत्व विषय में राम ने क्या कहा?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. वानरों के राजा महात्मा सुग्रीव का
2. ऋग्वेद को न पढ़ने वाला, यजुर्वेद का अभ्यास नहीं करने वाला, सामवेद को न जानने वाला
3. व्याकरण शास्त्र को
4. मुख, नेत्र, मस्तक, भौंह तथा अन्य सभी अंगों में
5. अविस्तारी, असन्दिग्ध, अविलम्बित, अव्यथम्, हृदय, कण्ठ, मूर्धा और मध्यम स्वर से युक्त
6. संस्कार क्रम से सम्पन्न, अद्‌भुत्, अविलम्बित, कल्याणकारी और हृदय को हरने वाली
7. मरने के लिए प्रवृत्त शत्रु को भी
8. कार्यों का परिणाम सिद्ध होता है
9. दूतवचनानुसार कार्य करके
10. ख. 11. क 12. घ 13. ग 14. ग
15. 1. ग 2. ङ 3. क 4. छ 5. झ,
    6. ख 7. ञ 8. घ 9. च 10. ज